दिन
१
९ जून, २००७

जीव से शिव की यात्रा

ॐ नमः शिवाय।

हे ईश्वर। सब का कल्याण हो। सबकी रक्षा करना। आज का दिन मेरी जीवन पुस्तिका में स्वर्णाक्षरों से अंकित होनेवाला है। हे शिव, हे परम पिता, मेरा बरसों पुराना स्वप्न सच होने जा रहा है। कहते हैं कि केवल पुण्यवान् लोग अपने स्वप्नों को परिपूर्ण होता देख़ पाते हैं। आज मेरे आनंद और उत्साह की कोई सीमा नहीं है, बारिश के पानी को तरसते हुए चातक की तरह मैंने इस दिन की प्रतिक्षा की है। मैं इससे अधिक क्या कहूं। मेरी नम आंखें और हृदय की तेज़ धडकन मेरी कृतज्ञता बयान कर रही है।

इस दिन की प्रतीक्षा करते हुए जो रोमांच मैंने अनुभव किया, उससे सौ गुना आनंद मेरे रोम रोम को हर्षित कर रहा है। मेरे सर्वस्व, महापिता शिव का साक्षात्कार करने जा रही हूं मैं। मुझे श्रद्धा और विश्वास है कि मैं यह दुर्गम यात्रा संपन्न कर सुख़पूर्वक वापस आऊंगी, धन्य होकर।

हर नया अनुभव हमारे लिये यादगार और खुशी प्रदान करने वाला होता है, आज मेरे साथ कुछ नया होने वाला है। वह अद्भुत दृश्य, जो मेरे मानसपटल पर अश्रुपूर्ण हास्य के साथ हमेशा के लिए अंकित हो गया है। हास्य - क्योंकि कैलाश-मानसरोवर यात्रा का शुभ अवसर मुझे प्राप्त हो रहा था। अश्रु - क्योंकि अपनों से पूरा एक महीना अलग होना था।

हृदय में शिवजी का स्मरण और यात्रा पूर्ण करने की जिजीविषा। मेरे सभी परिजनोंने मुझे अहमदाबाद (एयरपोर्ट) पर प्रेम-भरी बिदाई दी।

मैं मानसरोवर यात्रा के तीसरे जत्थे में थी। पहले जत्थे की यात्रा क्षेत्र में भारी बर्फबारी के कारण रद्द हो गई थी। पहले जत्थे के यात्री दूसरे जत्थे के रूप में गये थे, जिस में 57 यात्री थे। हर जत्थे में ज्यादा से ज्यादा 60 यात्री होते हैं। पिछले कुछ दिन, यात्रा निरस्त होने की आशंका में हम सभी ने काफी चिंता में गुज़ारे थे। अंततः यात्रा बहाल हो गई और हम सब परिजनों की शुभेच्छा और भक्तिभाव के साथ चल पड़े।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्
उर्वारुकमिव बन्धनात्, मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

(इस महामृत्युंजय मंत्र को संजीवनी मंत्र भी कहा जाता है, इसके उच्चारण से पैदा हुए कंपन शरीर के चारों ओर एक सुरक्षा-कवच रचते हैं। यह मंत्र जीवन में सुख़, शांति और समृद्धि लाता है।)

दिन
२
१० जून, २००७

शुरूआत

हमारी यात्रा का द्वितीय दिन। सुबह 8.00 बजे दिल्ली के हार्ट एंड लंग्ज़ अस्पताल पहूंचना था। वहां बारी बारी से एक्स-रे, टीएमटी और फेफड़ों की क्षमता परखने वाले परीक्षण हुए। कैलाशयात्रा के लिए फेफड़े, तरल वायु सह पाने में सक्षम होने अपेक्षित हैं। प्रत्येक परीक्षण के पहले उसमें सफल होंगे या नहीं, इस असमंजस की अवस्था से सभी यात्री यत्किंचित आशंकित अवश्य रहते थे। हर परीक्षण सफल होने पर प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती थी।

हम मानसरोवर यात्रा के लिये तैयार थे। उसके बारे में सभी ने अनोखी और चमत्कारिक बातें सुन रखी थी। कहते हैं, रात को सरोवर के किनारे बैठने से कई अजीब घटनाएं दिख़ती हैं। ऐसी दिव्य घटनाएं सब अपनी अपनी श्रद्धा की आंख़ से देख़ते हैं। किसी को तीन तारे आकाश से उतर कर जल में समाहित होते देख़ने को मिले। किसी को आकाश में गणपति की आकृति दिख़ी। किसी को अग्निकुंड में महादेव दिख़ाई दिए।

कैलाशयात्री शिवकुमार जी ने हमें बताया कि 'आप लोग रात्रि के समय मानसरोवर के किनारे अवश्य बैठना। कुछ न कुछ तो अवश्य दिख़ाई देगा। जीवन में ऐसे अवसर कम ही मिलते हैं। रात्रि के अंधकार में दैदीप्यमान सरोवर, रजतवर्णी कैलाश और आकाश में टिमटिमाते हज़ारों हीरक सितारे।' हम तो इन्हीं स्वप्नों को संजोए निद्रा के आगोश में समा गये।